श्री राम आरती
आरती कीजे श्री रामचंद्र की ।
दुष्टदलन सीतापति जी की ॥
पहली आरती पुष्पन की माला ।
काली नाग नाथ लाए गोपाला ॥
दूसरी आरती देवकी नंदन ।
भक्त उबारन कंस निकिंदन ॥
तीसरी आरती त्रभिुवन मोहे ।
रत्न सहिासन सीता राम जी सोहे ॥
चौथी आरती चहुं युग पूजा ।
देव नरिंजन स्वामी और न दूजा ॥
पांचवीं आरती राम को भावे ।
रामजी का यश नामदेवजी गावें ॥